मुख्य परीक्षा (सामान्य अध्ययन) विशेषांक

शॉर्ट्स कन्टेन्ट (पेपर-1 के लिए)

(लेखनः नूतन शुक्ला, वरिष्ठ संपादक एवं शिक्षाविद)

1. पटना कलम की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तरः पटना कलम की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- अधिकांश चित्र कागज पर बने **लघु चित्र** हैं। बाद में इसके चित्र हाथी दांत और चमड़े पर बनाए जाने लगे। इस शैली में दैनिक जीवन पर बने चित्रों की बहुतायत है। जैसे- दैनिक मजदूर, मछली बेचने वाले, टोकरी बनाने वाले आदि के चित्र। पटनिया एक्का (पटना का घोड़ा-गाड़ी) सबसे पुराने जीवित चित्रों में से एक है जो अभी भी पटना संग्रहालय में मौजूद है।
- चित्रकला की इस शैली में देशी पौधों, छालों, फूलों से रंग निकाले जाते था। चित्रों की विशेषता हल्के रंग के रेखाचित्रों और सजीव प्रस्तुतियों से स्पष्ट होती है।
- पटना चित्रकला शैली की एक और अनूठी विशेषता ठोस रूपों के छायांकन का विकास था। चित्र की रूपरेखा को रेखांकित करने के लिए पेंसिल का उपयोग किए बिना चित्रों को सीधे ब्रश से चित्रित किया जाता है। इस तकनीक को आमतौर पर कजली स्याही के नाम से जाना जाता था।
- अमीर और भव्य मुगल लघुचित्रों के विपरीत पटना कलम के चित्रकारों ने भव्यता को चित्रित करने से परहेज किया और इसके बजाय भारत के दैनिक जीवन विधि पर चित्र बनाने को ध्यान केंद्रित किया था।
- सादगी और समानुपातिक विन्यास इस शैली की प्रमुख विशेषता है इनमें चटख रंगों की जगह सौम्य और शांत रंगों का प्रयोग अधिक हुआ है।
- मुगल शैली से प्रभावित होते हुए भी कई मामलों में जैसे विषयवस्तु रंगों के उपयोग और छायांकन के तरीकों में यह मुगल शैली से अलग थी। मुगल शैली में जहाँ राजमहल से संबंधित विषय दृ वस्तु होते थे, वहीं पटना कलम शैली में आम जनजीवन को विषय बनाया जाता था।
- इसके चित्रों में श्रमिक वर्ग- (कुम्हार, नौकरानी, भिश्ती आदि), दस्तकारी वर्ग- (बढ़ई, लोहार, सुनार, रंगरेज आदि), तत्कालीन आवागमन के साधन- (पालकी घोड़ा, हाथी एक्का, बैलगाड़ी आदि) का चित्रांकन हुआ है इसी तरह मदरसा पाठशाला दाह संस्कार त्योहारों (होली, दशहरा आदि) एवं साधु-संतों के चित्र भी बनाए गए है ।

2. पाल चित्र और मूर्तिकला कला प्रपत्र क्या हैं?

उत्तरः पाल शासन के समय दो प्रकार के चित्र बनाए जाते थे-

i. **पाण्डुलिपि चित्र**- पाण्डुलिपि चित्र सामान्यतः ताम्रपत्र पर बनाए जाते थे। इनका उपयोग सजावटी उद्देश्यों के लिए किया जाता था। इन चित्रों में प्रयुक्त रंग लाल, काला, नीला, हरा, सफेद और बैंगनी थे। पाण्डुलिपि चित्रों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं **'अष्टसहसारिकप्रज्ञपरमिता'** और **'पंचरक्ष'**। ये दोनों चित्र कैम्ब्रिज संग्रहालय (इंग्लैंड) में आज भी संग्रहीत हैं।

ii. **भित्ति चित्र**- पाण्डुलिपि चित्रकला के अतिरिक्त महाविहार, चौत्यों, मंदिरों आदि की दीवारों पर भित्ति चित्र का भी चित्रण किया जाता था। इन चित्रों में फल, फूल, पशु, मानव, पक्षी और वृक्ष जैसे विभिन्न तत्वों को अंकित किया जाता था। पाल काल के भित्ति चित्रों का सबसे अच्छा उदाहरण सरायकिला (नालंदा) से प्राप्त भित्ति चित्र है। इस पेंटिंग में एक महिला को आईने में देखते हुए मेकअप करते हुए देखा जा सकता है। यह पेंटिंग कला के साथ-साथ मानवीय भावनाओं को भी दर्शाती है।

मूर्तिकला कला प्रपत्र

वास्तुकला और चित्रकला कला रूपों के अलावा मूर्तिकला कला का भी इस युग में अभूतपूर्व विकास हुआ। पाल काल से मुख्य रूप से दो प्रकार की मूर्तिकला कला मिलती है- 1. कांस्य मूर्तियां 2. पत्थर की मूर्तियां।

1. **कांस्य मूर्तियां**- ये सांचों का उपयोग करके कांस्य से बनायी जाती थी। इन मूर्तियों की एक प्रमुख विशेषता इनमें प्रयुक्त उत्कृष्ट अलंकरण थी। इन मूर्तियों की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि ये सामने से अलंकृत होते हुए भी पीछे से समतल थीं। धीमन और विठपाल नालंदा के दो महत्वपूर्ण मूर्तिकार थे। वे धर्मपाल और देवपाल (पाल शासकों) के समकालीन थे। कुलकिहार (गया), नालंदा और सुल्तानगंज से बड़ी संख्या में कांस्य मूर्तियां मिली हैं। इन मूर्तियों की तुलना चोल साम्राज्य की नटराज मूर्तियों के सौंदर्यशास्त्र से की जा सकती है। ये मूर्तियां मुख्य रूप से धार्मिक प्रकृति की थीं, जिनमें हिंदू और बौद्धों के विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाई गयी हैं। इस मूर्तिकला शैली के महत्वपूर्ण उदाहरण बुद्ध, विष्णु, बलराम, बोधिसत्व आदि के थे।
2. **पत्थर की मूर्तियां**- कांस्य की मूर्तियों के अलावा मूर्तियां, पत्थरों से बनाई जाती थीं। इन मूर्तियों को बनाने के लिए जिन पत्थरों का इस्तेमाल किया गया था वे मुख्य रूप से बेसाल्ट थे जो मुंगेर या संथाल परगना से लाए गए थे। कांसे की मूर्तियों के समान ही पत्थर की मूर्तियों में भी अलंकरण किया जाता था।

3. दक्षिण बिहार की स्थानीय कला की चर्चा कीजिए।

उतर: पुराने समय से बिहार में लकड़ी के शिल्प का इतिहास रहा है जिसमें लकड़ी के फर्नीचर और खिलौनों का निर्माण होता है। मौर्य इतिहास से ही और विशेष रूप से अशोक के समय से ही यह कलात्मक सुंदरता, रचनात्मकता, स्थायित्व और सस्ती कीमत के मामले में उच्च स्तर पर बना हुआ है। अशोक के शासनकाल के दौरान बिहार के लकड़ी के कलाकारों द्वारा सुंदर शाही सिंहासन, शाही द्वार या मंदिरों के दरवाजे और पैनल बनाए गए थे। लकड़ी के काम की यह प्राचीन और समृद्ध परंपरा अब भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उनकी भारी मांग के कारण एक बड़े उद्योग में परिवर्तित हो गई है। पटना लकड़ी के खिलौने बनाने का एक बहुत प्रसिद्ध केंद्र है।

रॉक पेंटिंग्स प्राचीन मानव के गुफा आश्रय की दीवारों और छत पर किए गए चित्रों का एक विशेष रूप है। ये चित्र उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन के प्रतिबिंब थे। उनका चित्र बनाने का मुख्य उद्देश्य सूर्य, चंद्रमा, तारे, पशु, पक्षी, पौधे, पेड़ और नदियाँ आदि प्राकृतिक रूपों को दिखाना था। इसके अलावा वे रोजमर्रा की जिंदगी की कई गतिविधियों जैसे शिकार, दौड़, नृत्य करना और चलना भी चित्रित करते थे। इन चित्रों को चट्टानों या धातु के टुकड़ों जैसी कुछ नुकीली वस्तुओं की मदद से शैलाश्रय की दीवारों और छत पर उकेरा गया था। तत्पश्चात पेड़ों की पत्तियों से निकाले गए रंगों जैसे विभिन्न देशी रंगों को उस पर लगाया जाता था।

बिहार में मिट्टी के बर्तनों के काम का समृद्ध इतिहास रहा है। मौर्य और गुप्त काल से ही यह कला बिहार में प्रचलित रही है। नालंदा और राजगीर जैसे स्थानों की पुरातत्व खुदाई ने बिहार में इस कलात्मक शिल्प के अस्तित्व की पुष्टि की थी। बिहार के कुम्हारों द्वारा सुंदर मिट्टी के बर्तन और टाइलें बनाई जाती हैं। ये जाति विशेष के कारीगर मिट्टी के बर्तनों पर कलात्मक और सुंदर चित्र बनाने की क्षमता और कौशल रखते हैं। ऐसे काम के लिए पटना बहुत मशहूर है। पटना विभिन्न देवी-देवताओं की मिट्टी की जीवंत मूर्तियाँ बनाने के लिए भी प्रसिद्ध है।

बिहार में पूर्व-ऐतिहासिक काल से ही पीतल की मूर्तियाँ बनाई जाती रहीं है। लेकिन कला का यह रूप मौर्य शासन के दौरान और फिर गुप्त और पाल शासन काल में अपने चरम पर था। नालंदा और राजगीर जैसे कई पुरातत्व उत्खनन स्थलों से इसकी पुष्टि हुई है। बिहार के कलाकार अब भी देवी-देवताओं की मूर्तियां, बर्तन, लोहे के घड़े और घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुएं बड़ी बारीकी से बनाने में निपुण हैं।

कलात्मक कढ़ाई और जरी का काम बिहार में बहुत प्रसिद्ध है और कई परिवारों के लिए आजीविका का व्यवसाय भी है। जरी के

कुछ बेहतरीन काम शामियाना, कानाथ, चंदवा, तकिए के कवर, बतवा, संगीत वाद्ययंत्र के कवर, मेजपोश, खिड़की के पर्दे, ब्लाउज के टुकड़े, साड़ी, बॉर्डर आदि में देखें जा सकते हैं। पटना जरी और कढ़ाई के काम के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

कसीदा कढ़ाई का काम कला का एक बहुत ही प्राचीन रूप है। कसीदा कढ़ाई सोने और चांदी के धातु के धागों, मोतियों, रेशम और सेक्विन या मखमल पर पक्षियों, पत्ती और कई अन्य के रूपांकनों के साथ की जाती है। ज्यामितीय पैटर्न वाली कसीदा कढ़ाई बिहार में बहुत प्रसिद्ध है। पटना इस प्रकार की कसीदा कढ़ाई का एक प्रसिद्ध केंद्र है।

कपड़ा छपाई बिहार में कला और शिल्प के अन्य रूपों की तरह ही प्राचीन है। विशेष रूप से पटना इस कला के लिए बहुत प्रसिद्ध है जो तोते, मोर, हाथी, आम, शंख, मछली और विभिन्न देवताओं जैसे रूपांकनों वाली चुनरी बनाने के लिए अलग पहचान रखता है।

चांदी और सोने के आभूषण बनाना वास्तव में बिहार के इतिहास से जुड़ा हुआ है जो विशेष रूप से प्राचीन काल के दौरान भारतीय इतिहास की आधारशिला थी। इसलिए बिहार में चांदी और सोने के आभूषण का काम बहुत खास है। बिहार के सुनार सोने और चांदी के सुंदर और कलात्मक आभूषण बनाने के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। विशेष रूप से चांदी के आभूषणों पर कुंदन का काम अत्यधिक प्रशंसनीय है क्योंकि इसके लिए उच्च स्तर के कौशल और एकाग्रता की आवश्यकता होती है।

चित्रकला के कई भारतीय स्कूल बाद में फले-फूले और वे मुगल चित्रों से काफी प्रभावित थे। इनमें से एक पटना स्कूल ऑफ पेंटिंग या पटना कलम या कंपनी पेंटिंग थी। पटना कलम बिहार में 18वीं शताब्दी के मध्य से 20वीं शताब्दी के मध्य तक फली-फूली मुगल चित्रकला की एक शाखा थी। मुगल चित्रकला के विपरीत, जिसका विषय मुख्य रूप से शाही और दरबारी दृश्य थे, पटना कलम के चित्रकार आम लोगों के दैनिक जीवन से गहराई से प्रभावित थे। उनके मुख्य विषय बाजार के दृश्य, स्थानीय शासक, स्थानीय त्योहार और समारोह थे।

4. विश्व व्यापार संगठन की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: विश्व व्यापार संगठन का प्राथमिक उद्देश्य व्यापार के मुद्दों से उत्पन्न अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष के जोखिम को कम करने के लिए राष्ट्रों के बीच व्यापार विवादों को हल करना है। जैसा कि देशों के बीच प्राथमिक बातचीत व्यापार क्षेत्र में होती है, विश्व व्यापार संगठन इस तार्किक तनाव बिंदु पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर दबाव कम करना चाहता है। विश्व व्यापार संगठन आमतौर पर व्यापार को उदार बनाने और व्यापार और विवाद समाधान के लिए एक विश्वसनीय और सुसंगत रूपरेखा प्रदान करता है। विश्व व्यापार संगठन की छह प्रमुख भूमिकाओं पर नीचे चर्चा की गई है।

1. **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए नियम स्थापित करना और लागू करना**- विश्व व्यापार संगठन द्वारा नियमों का प्रवर्तन सदस्य देशों द्वारा व्यापार नियमों के उल्लंघन के मामलों में विवादों के समाधान की बहुपक्षीय प्रणाली के माध्यम से होता है। सदस्यों को प्रक्रियाओं और निर्णयों का सम्मान और पालन करने के लिए अनुसमर्थित समझौतों के तहत बाध्य किया जाता है।
2. **ग्लोबल एपेक्स फोरम के रूप में कार्य करना**- विश्व व्यापार संगठन आगे व्यापार उदारीकरण की निगरानी और बातचीत के लिए वैश्विक मंच है। विश्व व्यापार संगठन द्वारा किए गए व्यापार उदारीकरण उपायों का आधार मुक्त और निष्पक्ष व्यापार व्यवस्था के कारण तुलनात्मक लाभ की स्थिति का इष्टतम उपयोग करने के लिए सदस्य देशों के लाभों पर आधारित है।
3. **व्यापार विवादों का समाधान**- विश्व व्यापार संगठन के समक्ष व्यापार विवाद, आमतौर पर सदस्य देशों के बीच समझौतों से विचलन के कारण उत्पन्न होते हैं। इस तरह के व्यापार विवादों का समाधान एकतरफा नहीं बल्कि एक बहुपक्षीय प्रणाली के माध्यम से होता है जिसमें विवाद निपटान निकाय के समक्ष निर्धारित नियम और प्रक्रियाएं शामिल होती हैं।
4. **निर्णय लेने की प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाना**- विश्व व्यापार संगठन विशेष रूप से निर्णय लेने और सर्वसम्मति के नियम में अधिक भागीदारी के माध्यम से निर्णय लेने की प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाने का प्रयास करता है। ऐसे उपायों का संयुक्त प्रभाव संस्थागत पारदर्शिता विकसित करने में मदद करता है।

5. **अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों के बीच सहयोग**– वैश्विक आर्थिक संस्थानों में विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन और विश्व बैंक शामिल हैं। वैश्वीकरण के आगमन के साथ बहुपक्षीय संस्थानों के बीच घनिष्ठ सहयोग आवश्यक हो गया है। ये संस्थान वैश्विक आर्थिक नीति ढांचे के निर्माण और कार्यान्वयन के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। नियमित परामर्श और आपसी सहयोग के अभाव में नीति निर्माण बाधित हो सकता है।
6. **विकासशील देशों के व्यापारिक हितों की रक्षा करना**– विकासशील देशों के व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए विश्व व्यापार संगठन द्वारा कड़े नियम लागू किए जाते हैं। यह संगठन के शासनादेशों को पूरा करने, विवादों के प्रबंधन और प्रासंगिक तकनीकी मानकों को लागू करने की क्षमता का लाभ उठाने के लिए ऐसे सदस्य देशों का समर्थन करता है।
7. **व्यापार नीति की समीक्षा के लिए नियमों का कार्यान्वयन**– व्यापार के अंतर्राष्ट्रीय नियम स्थिरता और आश्वासन प्रदान करते हैं और सदस्य देशों के बीच आम सहमति बनाते हैं। नीतियों की समीक्षा यह सुनिश्चित करने के लिए की जाती है कि हमेशा बदलते व्यापारिक परिदृश्यों के बावजूद, बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली फलती-फूलती रहे। यह व्यापार करने के लिए एक पारदर्शी और स्थिर ढांचे की सुविधा में भी मदद करता है। सदस्य देशों के लिए फोरम भविष्य की रणनीतियों पर चर्चा करता है
8. **व्यापार विवाद निपटान**– विश्व व्यापार संगठन द्वारा विवाद निपटान व्यापार विवादों के समाधान से संबंधित है। न्यायाधिकरण के स्वतंत्र विशेषज्ञ समझौतों की व्याख्या करते हैं और संबंधित सदस्य राज्यों की उचित प्रतिबद्धताओं का उल्लेख करते हुए निर्णय देते हैं। सदस्यों के बीच परामर्श के माध्यम से भी विवादों को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

5. ब्रिक्स के महत्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर: ब्रिक्स अधिक टिकाऊ, न्यायसंगत और पारस्परिक रूप से लाभकारी विकास के लिए समूह के भीतर और अलग-अलग देशों के बीच सहयोग को गहरा, व्यापक और तीव्र करना चाहता है। ब्रिक्स प्रत्येक सदस्य के विकास, विकास और गरीबी के उद्देश्यों को ध्यान में रखता है ताकि संबंधित देश की आर्थिक ताकत पर संबंध बनाए जा सकें और जहां संभव हो वहां प्रतिस्पर्धा से बचा जा सके। ब्रिक्स वैश्विक वित्तीय संस्थानों में सुधार के मूल उद्देश्य से बहुत दूर विविध उद्देश्यों के साथ एक नई और आशाजनक राजनीतिक-राजनयिक इकाई के रूप में उभर रहा है।

ब्रिक्स के भीतर सहयोग के मुख्य क्षेत्र

1. आर्थिक सहयोग

- ब्रिक्स देशों के साथ-साथ कई क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग गतिविधियों के बीच व्यापार और निवेश प्रवाह तेजी से बढ़ रहे हैं।
- आर्थिक और व्यापार सहयोग के क्षेत्रों में समझौते किए गए हैं; नवाचार सहयोग, सीमा शुल्क सहयोग; ब्रिक्स बिजनेस काउंसिल, कंटिजेंट रिजर्व एग्रीमेंट और न्यू डेवलपमेंट बैंक के बीच रणनीतिक सहयोग।
- ये समझौते आर्थिक सहयोग को गहरा करने और एकीकृत व्यापार और निवेश बाजारों को बढ़ावा देने के साझा उद्देश्यों की प्राप्ति में योगदान करते हैं।

2. लोगों से लोगों का आदान-प्रदान

- ब्रिक्स सदस्यों ने लोगों से लोगों के आदान-प्रदान को मजबूत करने और संस्कृति, खेल, शिक्षा, फिल्म और युवाओं के क्षेत्रों में घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता को पहचाना है।
- लोगों से लोगों का आदान-प्रदान नई दोस्ती बनाने की कोशिश करता है; खुलेपन, समावेशिता, विविधता और आपसी सीखने की भावना में ब्रिक्स लोगों के बीच संबंधों और आपसी समझ को गहरा करना।
- ऐसे लोगों से लोगों के आदान-प्रदान में यंग डिप्लोमैट्स फोरम, पार्लियामेंटेरियन फोरम, ट्रेड यूनियन फोरम, सिविल ब्रिक्स के साथ-साथ मीडिया फोरम शामिल हैं।

3. राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग

- ब्रिक्स सदस्य राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग का उद्देश्य अधिक न्यायसंगत और निष्पक्ष दुनिया के लिए शांति, सुरक्षा, विकास और सहयोग प्राप्त करना है।
- ब्रिक्स घरेलू और क्षेत्रीय चुनौतियों के संदर्भ में नीतिगत सलाह साझा करने और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान के साथ-साथ वैश्विक राजनीतिक संरचना के पुनर्गठन को आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करता है ताकि यह अधिक संतुलित हो, बहुपक्षवाद के स्तंभ पर टिका रहे।
- ब्रिक्स का उपयोग अफ्रीकी एजेंडा और दक्षिण-दक्षिण सहयोग की खोज सहित दक्षिण अफ्रीका की विदेश नीति प्राथमिकताओं के लिए एक चालक के रूप में किया जाता है।

4. सहयोग तंत्र

सदस्यों के बीच सहयोग के माध्यम से प्राप्त किया जाता है:

- ट्रैक I: राष्ट्रीय सरकारों के बीच औपचारिक राजनयिक जुड़ाव।
- ट्रैक II: सरकार से संबद्ध संस्थानों के माध्यम से जुड़ाव।
- ट्रैक III: नागरिक समाज और लोगों से लोगों का जुड़ाव।

☆☆☆

अपने नजदीकी Book Stall से प्राप्त करें

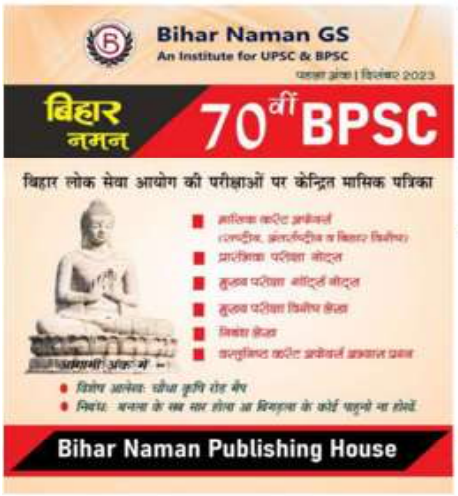

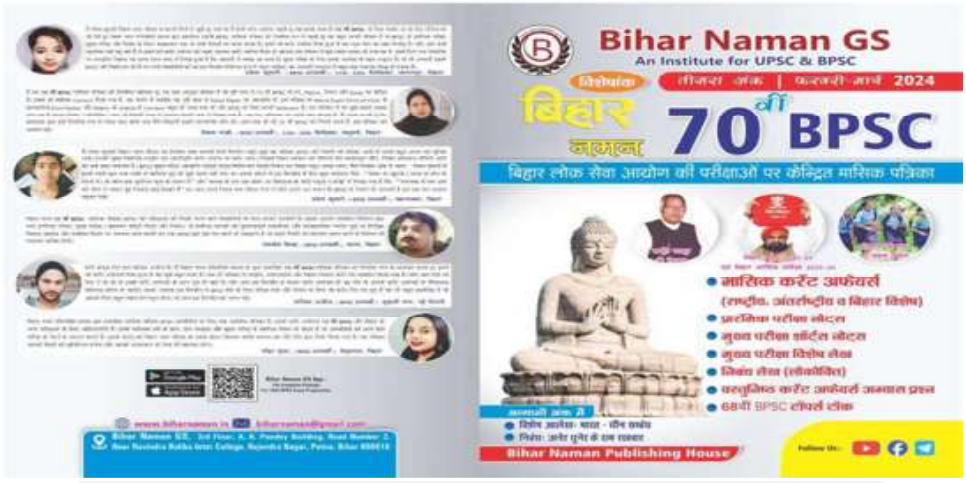

अपने नजदीकी Book Stall से प्राप्त करें